पूर्व के साहित्य में अभाव था भारत में इसके पूर्व जो कथासाहित्य था वह मूलतः कल्पना से अतिरंजित एवं समाज से कटा हुआ साहित्य था अतः समाज के लिए अर्थहीन था। जबकि आधुनिक कहानियाँ समाज की जीवन्त तस्वीर सामने रख उसे जनोन्मुखी बनाकर प्रस्तुत करने वाली विधा है। कहानी जीवन के एक क्षण या प्रसंग विशेष को चित्रित करने वाली साहित्यिक विधा है। इसमें नायक के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित नहीं किया जाता वरन उसके जीवन के विशेष एवं उल्लेखनीय भाग को चित्रित किया जाता है।

निबंध :- अपने विचारों को किसी विषय विशेष पर केन्द्रित कर उसकी विशेषताओं और सम्भावनाओं को रेखांकित करने वाली विधा निबंध है। इसके दो प्रकार हैं:- (i) निबंध (ii) ललित निबंध या व्यक्तिगत निबंध। निबंध में गंभीरता होती है। किसी विषय का गहनतम के साथ ही सूक्ष्मतम वर्णन एवं विश्लेषण निबंध कहलाता है। जबकि ललित निबंध में सम्बद्ध विषय का वर्णन तो उसी सूक्ष्मता एवं विस्तार के साथ होता है, किन्तु उसका उद्देश्य हास्यपरक या उन्मुक्तता होता है। शिवपूजन सहाय, कामता प्रसाद सिंह, विद्यानिवास मिश्र प्रभृति उच्च कोटि के निबंधकार एवं ललित निबंधकारों में परिगणित किए जाते हैं।

संस्मरण :- अपनी स्मृतियों को आधार बनाकर किसी व्यक्ति या स्थान के बारे में प्रस्तुत गद्यात्मक विधा संस्मरण कही जाती है। इसमें अतीत की घटनाओं को आधार बनाया जाता है। हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, जैनेन्द्र कुमार जैसे साहित्यकारों ने प्रचुर मात्रा में संस्मरण लिखे हैं।

शब्दचित्र या रेखाचित्र :- जिस गद्यात्मक विधा रंग और रेखाओं के स्थान पर शब्दों के द्वारा चित्र प्रस्तुत क का विधान किया जाए, उसे शब्दचित्र कहा जाता है। शब्दचित्र में शब्दों का प्रयोग इस कुशलता से किया जाता है कि वर

विषय की सारी भौतिक या बाह्य एवं आंतरिक विशेषताएं स्पष्ट हो जाएं वहां शब्दचित्र का आविर्भाव होता है।

महादेवी वर्मा का - गौरा, आलोपीदीन, रामबृक्ष बेनीपुरी का माटी की मूरतें, उदयराज सिंह का गांव के दिवलों ने इत्यादि शब्दचित्र के उदाहरण हैं।

आत्मकथा - आधुनिककाल में यह विधा बहुत लोकप्रिय है। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं या जीवन के बारे में स्वयं लिखे तो उसे आत्मकथा कहते हैं। गांधीजी की 'आत्मकथा' सत्य के प्रयोग शीर्षक से प्रकाशित है तो वहीं नेहरू जी की - मेरी आत्मकथा, राजेन्द्र प्रसाद की 'मेरी राम कहानी' तो ओम प्रकाश वाल्मीकि की - जूठन - श्रेष्ठ आत्मकथाएं हैं।

जीवनी - जब किसी व्यक्ति के जीवन के बारे में कोई दूसरा व्यक्ति लिखता है तो वह जीवनी कहलाती है। बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने जीवन का प्रचार-प्रसार नहीं चाहते किन्तु उन जीवन समाज के लिए प्रेरणाप्रद हो सकता है। ऐसे में उनके जीवन को लिपिबद्ध हुए आलेख को जीवनी कह सकते हैं।

रिपोर्ताज :- रिपोर्ताज शब्द अंग्रेजी के रिपो शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है विवरण प्रस्तुत करना। किसी स्थल या स्थान विशेष का आंखों देखा हाल प्रस्तुत करना रिपोर्ताज कहलाता है। यह एक रेडियो या दूरदर्शन के लिए प्रस्तुत होने वाली विधा है। वर्तमान में इसका प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है। धर्मवीर भारती ने भारत-पाक युद्ध के समय पत्रिका में छापने के लिए श्रेष्ठ रिपोर्ताजों का लेखन किया था

इस प्रकार हमने देखा कि गद्य एवं पद्य के कितने सारे रूप होते हैं और उनकी क्या विशेषताएं हैं।